रयत शिक्षण संस्था का

डी. पी. भोसले कॉलेज, कोरेगाव

हिंदी विभाग

अजिंक्यतारा यात्रा

Date -27/02/2019

इतिवृत्त

हिंदी विभाग की ओर से दि. 27 फरवरी 2019 को बी.ए. भाग 3 के छात्र–छात्राओं को साथ लेकर हमने सतारा में पहाड़ी पर स्थित अजिंक्यतारा किले की यात्रा की । इस समय हम सभी ने इस ऐतिहासिक किले को निहारते हुए विविध जानकारी प्राप्त की। इस ऐतिहासिक और मनोहारी किले को की यात्रा करने के बाद हम सतारा शहर में निकल पडे।

अजिंक्यतारा किले का परिचय

इसका निर्माण शिलर राजवंश के राजा, राजा भोज ने किया था। यह 3000 फीट की ऊँचाई पर है और समुद्र तल से 1006 मीटर की ऊंचाई पर है। यह ~~सांगली~~ सातारा जिले में है। इसे "सप्त ऋषि" किले के नाम से भी जाना जाता है। यह किला दुश्मन से रक्षा प्रदान करता है। इस के भीतर मनमोहन करने वाला मंगलाई देवी का मंदिर है। यह किला 1857 के शहिदो की याद में बनाया गया है। इस किले को हम यातेश्वर पहाड़ी से भी देख सकते हैं, जो की यहाँ से 5 किलोमीटर की दूरी पर है। इस किले की चोटी से हम पुरे सतारा शहर का नज़ारा देख सकते हैं।

अजिंक्यतारा यह किला सतारा के किले के रूप में भी जाना जाता है. यह सतारा शहर में कहीं से भी देखा जा सकता है . अजिंक्यतारा पर्वत "बामनोली" पर्वत श्रृंखला पर बसा है जो कि प्रतापगढ़ से शुरू होती है. इन सभी किलों की भौगोलिक महत्व यह है कि, यहाँ पर एक किले से दूसरे किले तक सीधे यात्रा कर पहुँचाना असंभव है. इस क्षेत्र में स्तिथ बाकी सभी किले अजिंक्यतारा के अपेक्षाकृत कम ऊंचाई पर हैं.

इतिहास:

अजिंक्यतारा मराठों की चौथी राजधानी था ,जिनमे पहला राजगढ़, फिर रायगढ़ और उसके बाद जिंजी का किला था . शिलाहार राजा भोज - द्वितीय ने वर्ष ११९० में इसका निर्माण करवाया था. इस किले पर पहले बहमानियों के द्वारा और फिर बीजापुर के आदिलशाह के द्वारा कब्जा हुआ. वर्ष १५८० में, आदिलशाह - १ की पत्नी चाँदबीबी को यहाँ कैद किया गया था. बजाजी निंबालकर को भी इसी जगह पर रखा गया था. स्वराज्य के विस्तार के दौरान शिवाजी महाराज ने २७ जुलाई १६७३ से इस किले पर शासन किया . स्वास्थ्य बिगड़ने पर शिवाजी महाराज यहाँ दो महीने रहे भी थे. परन्तु शिवाजी महाराज की दुर्भाग्यपूर्ण मृत्यु के बाद, औरंगजेब ने १६८२ में महाराष्ट्र पर आक्रमण किया. १६९९ में उन्होंने किले को घेर लिया.
प्रयागजी प्रभु उस समय किले के प्रमुख थे. १३ अप्रैल १७०० में, मोगलो ने खाइयों के खोदा और विस्फोटकों का इस्तेमाल कर मंगलाई नाम के गढ़ को नष्ट कर दिया. ve प्राचीर को नष्ट करने तथा कुछ मराठों को मार गिराने में सफल हुए. सौभाग्य से प्रयागजी प्रभु मामूली चोटों के साथ बच निकले. उसी पल में एक और विस्फोट हुआ और टूटी हुई प्राचीर मोगलो पर गिर गई . युद्ध आगे बढ़ा और सुभंजी ने २१ अप्रैल १७०० को किला हाथों में ले लिया .फिर मोगलो को किले को हासिल करने में साढ़े चार महीने लग गए.किले पर कब्ज़ा करने पर उन्होंने किले को 'आज़मतारा' नाम दिया.
तारा - रानी सेना फिर से इस किले जीता और फिर से 'अजिंक्यतारा' नाम रख दिया. मोगलो ने फिर किले पर कब्ज़ा किया. १७०८ में छत्रपति शाहू महाराज ने द्रह्ह द्वारा किले को वापस ले लिया और खुद को किले का शासक घोषित कर दिया .१७१९ में, छत्रपति शाहू महाराज की माता 'मातोश्री येसूबाई ',को यहाँ पर लाया गया था. बाद में यह किला पेशवाओं को विरासत में मिला.शाहू - द्वितीय की मौत के बाद, ब्रिटिश सेना ने ११ फ़रवरी १८१८ को इस किले पर कब्जा कर लिया .

दर्शनीय स्थल :

सतारा की तरफ से जाने पर किले के दो प्रवेश द्वार हैं. एक प्रवेश द्वार अच्छी अवस्था में है. दोनों गढ़ अभी भी मौजूद हैं .प्रवेश द्वार के दाईं ओर एक हनुमान मंदिर है. यह रहने के लिए सबसे उपयुक्त जगह है. किले पर जल उपलब्ध नहीं है. बाईं ओर की ओर रास्ते पर जाते समय महादेव मंदिर नजर आता है. इस के सामने प्रसारभारती का कार्यालय तथा दो मीनार स्तिथ है है. आगे जाने के बाद, बाईं ओर "मंगलादेवी मंदिर की ओर' ऐसा लिखा हुआ फलक नजर आता है .
यहाँ हमे 'तारा रानी' का महल तथा एक बड़ा गोदाम दिखाई देता है. इस सड़क के अंत में मंगलादेवी का मंदिर है. इसके ही सामने मंगलादेवी गढ़ है. मंदिर के आसपास के परिसर में कई प्रतिमाये नजर आती हैं . उत्तर में दो प्रवेश द्वार हैं. प्रवेश द्वार के लिए जाने का रास्ता सतारा कराड सड़क से होता हुआ आता है. प्रवेश द्वार के पास तीन झीलों हैं. किला देखने के बाद हम उसी दिशा से नीचे आ सकते है . किले से हम यावतेश्वर के पठार, चंदन - वंदन, कल्याणगड़, जरंदा और सज्जनगड किलों को देख सकते हैं. किले को देखने के लिए लगभग डेढ़ घंटे का समय लग सकता है .

विभागाध्यक्ष,
हिंदी विभाग

प्रधानाचार्य
डी. पी. भोसले कॉलेज कोरेगाव

डी. पी. भोसले कॉलेज कोरेगाव

हिंदी विभाग २०१८-१९

अजिंक्यतारा यात्रा

राजप्रासाद भग्नावस्था में

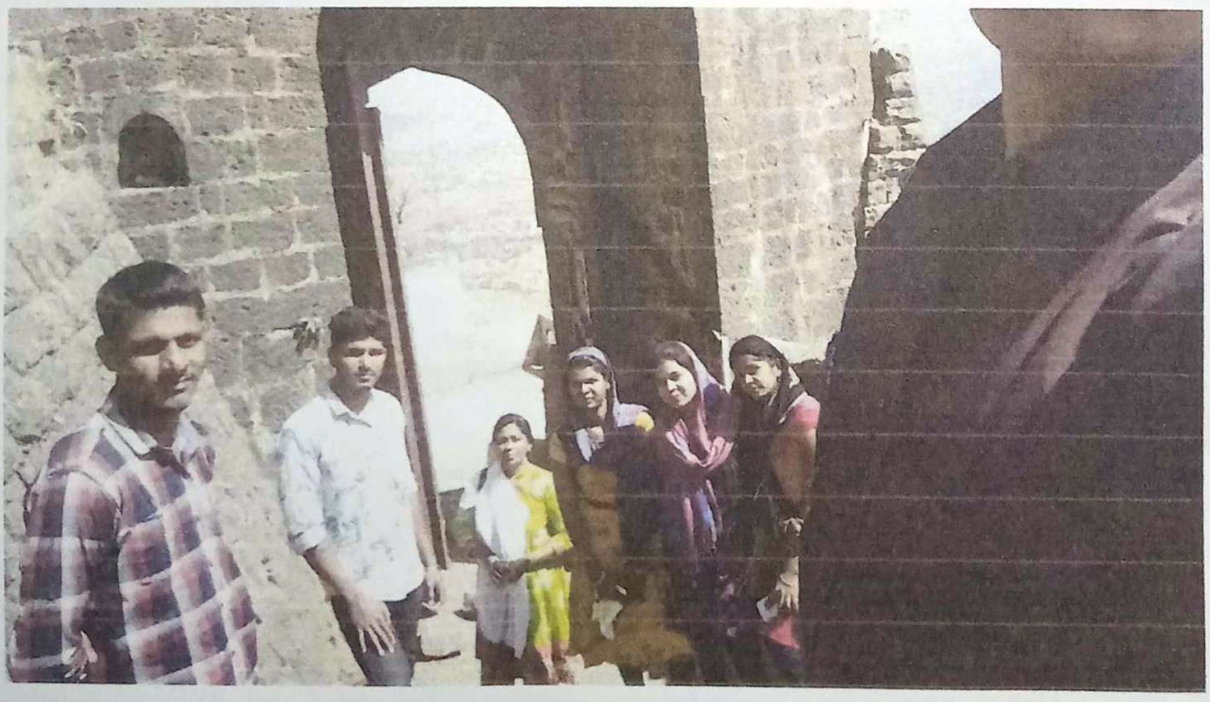

अजिंक्यतारा दक्षिण दरवाजा

D-7-5

Rayat Shikshan Sanstha's

D.P. Bhosale College, Koregaon

DEPARTMENT OF HINDI

27/02/2019

अजिंक्यतारा अध्ययन यात्रा

Sr. No.	Roll No.	Name of the Students	Address	Phone no.	A/P
1	751	Ambawale Poonam Vishnu	Asare	7448031723	P
2	752	Bhosale Trupti Ankush	Eksal	9765986529	P
3	753	Birje Pooja Maruti	Koregaon	9067829774	P
4	754	Bobade Sonam Shankar	Bobadewadi	9922137047	P
5	755	Dhawale Aawrutti Abhay	Peth Kinhai	7057176660	P
6	756	Ghadge Priyanka Ganpat	Lhasurne	9075314328	P
07	757	Ghorpade Pooja Sanjay	Shirdhon	7719839635	P
08	758	Jadhav Puja Sunil	Bhakarwadi	7263951457	P
09	759	Jadhav Sourabh Swami	Koregaon	9822188762	P
10	760	Lawale Akshay Balawant	Azadpur	8605174517	P
11	761	Mulay Yogesh Namdev	Koregaon	7507631555	P
12	762	Pawar Trupti Shankar	Saigaon	8554080946	P

Head
Department of Hindi
D. P. Bhosale College, Koregaon